बच्चों से बातचीतः विज्ञापन से सपनों तक

– उमा देवी

आज मुझे कक्षा में विज्ञापनों के महत्व पर एक प्रोजेक्ट कार्य बच्चों से करवाना था। जिसमें कुछ बच्चों को टेलीविजन में आने वाले विज्ञापनों का अभिनय करना था और अन्य बच्चों को अनुमान लगाना था यह कि किस चीज का विज्ञापन है। बच्चों को विभिन्न विज्ञापनों के चित्र अपनी प्रोजेक्ट फाइल में चिपकाने थे। विज्ञापन के बारे में बताने से पहले बच्चों को विज्ञापन तक लाने के लिये मैंने पूछा कि आप लोगों में से टेलीविजन कौन–कौन देखता है। बच्चों ने सोचा शायद मैम डांटेंगी या कहेंगी कि टेलीविजन देखना अच्छी बात नहीं है। बच्चे बोले टेलीविजन देखना बहुत बुरी बात नहीं। मैंने पूछा क्या टेलीविजन देखने से कोई लाभ नहीं है? तब बच्चे बोले टेलीविजन देखने से बहुत फायदे होते हैं। मैंने पूछा क्या–क्या फायदे होते हैं? बच्चे बोले टेलीविजन देखने से घर बैठे दुनिया के बारे में पता चलता है। फिल्में देखते हैं। नाटक देखते हैं। तभी एक बच्चा बोला मैडम जी टेलीविजन देखने से नॉलेज बढ़ता है। मैंने पूछा ये नॉलेज क्या होता है। बच्चे बोले ज्ञान बढ़ता है। मैंने फिर सवाल किया ये ज्ञान क्या होता है।

एक बच्चा बोला मैडम ज्ञान जल्दी दिमाग में घुस जाता है। बच्चों के साथ मैं भी बच्चों की तरह बोली क्या दिमाग में कोई छेद होता है कि ज्ञान दो और वह जल्दी से घुस जाता है। बच्चे बोले टेलीविजन पर हम देखते सुनते हैं तो दिमाग को जल्दी समझ में आता है। मैंने फिर पूछा कौन कौन टेलीविजन देखता है? दो बच्चों को छोड़कर सभी बच्चों ने हां में हाथ खड़ा किया। मैंने दोनों बच्चों से पूछा तुम्हें टेलीविजन देखना अच्छा नहीं लगता? अन्य बच्चों ने कारण बताया कि उनके घर में टेलीविजन नहीं है।

अब तो सभी बच्चों ने उत्साहित होकर हाथ खड़े कर दिये। तभी एक बच्चे ने उत्साहित होकर कहा मैं रात के 7 बजे से 12 बजे तक टेलीविजन देखता हूं। मैंने बच्चों से ही पूछा कि क्या इतनी देर तक टेलीविजन देखना सही है? बच्चे बोले नहीं। इतनी देर टेलीविजन देखने से आंखें कमजोर हो जाती है। आंखें सूज जाती है। दिन में स्कूल में नींद आती है। बच्चों ने सुझाया कि हमें समय से टेलीविजन देखना चाहिए। तभी एक बच्ची बोली मैडम जी एक प्रश्न पूछूं, मैंने कहा पूछो।

बच्ची बोली– मैडम जी सपने क्यों आते हैं? तभी एक बच्ची बोली तुम बिस्तर में खाना खाती होगी तभी तुम्हें भूत के सपने आते होंगे। मैंने कहा 'ये तुम्हारी मम्मी ने कहा होगा'। वह बच्ची बोली 'हां मेरी मम्मी कहती है'।

कहां तो मैं चली थी विज्ञापन के महत्व पर बच्चों के बीच प्रोजेक्ट कार्य करवाने, पर यहां तो बच्चों ने मुझे अपनी बातों में उलझा लिया। मैंने भी उन्हें रोका नहीं बल्कि सपनों पर उनकी चर्चा में शामिल हो गई। मैंने कहा बिस्तर में खाना खाना चाहिए क्या? सभी बच्चे बोले नहीं। फिर मैंने कक्षा के सभी बच्चों से पूछा कि उन्हें कैसे सपने आते हैं। अधिकांश बच्चे बोले उन्हें भूत प्रेत के सपने आते हैं। एक बच्चा बोला मुझे सपने में भालू दिखाई देता है। मैं डर कर कुंए में गिर जाता हूं। मैंने कहा पहले जिस बच्ची ने प्रश्न किया था उसके प्रश्न का उत्तर देते हैं। मैंने बच्चों से ही कारण पूछा कि इस बच्ची को भूत–प्रेत के सपने क्यों आते हैं? बच्चों ने उत्तर दिया कि ये भूत प्रेत की फिल्म देखती होगी। या भूत प्रेत का नाटक देखती होगी या भूत प्रेत की बातें करती होगी।

फिर अगले बच्चे के सपने के बारे में पूछा कि इसे भालू और हाथियों के सपने क्यों आते है? बच्चों ने उत्तर दिया कि ये वनरेंज में रहते हैं। जहां हाथी और भालू अक्सर आते जाते रहते हैं और जंगली जानवरों का भय बना रहता है। इसलिये जंगली जानवरों के सपने आते हैं। तभी एक बच्चा बोला मैं गुंड़ा बन जाता हूं और लोगों को मारता हूं ऐसा सपना आता है। मैंने बच्चों से ही ऐसे सपने का कारण पूछा। बच्चों ने बताया कि ये फिल्में ज्यादा देखता है और लड़ाई झगड़ा भी ज्यादा करता है। इसकी अपने से बड़े लड़कों से दोस्ती रहती है। बच्चों को सपने आने के इतने अच्छे कारण बताये कि मैं भी सुनकर हैरान थी।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय पत्थर चट्टा, रूद्रपुर में अध्यापिका हैं)